सदियों ने खता की है, लम्हों ने सजा पाई है

'गलती करे कोई, भुगते कोई' आज यह उक्ति भारत और नेपाल की राजनीतिक परिस्थितियों पर अक्षरशः सही बैठती है। राजनीति इतनी स्वार्थी, अंधी और निकृष्ट हो सकती है, सम्भवतः ऐसा हमारे नीति नियन्ताओं अथवा संविधान निर्माताओं ने भी नहीं सोचा होगा। भारत का पड़ोसी मित्र राष्ट्र नेपाल आज जिन विषम परिस्थितियों का सामना कर रहा है वह न केवल नेपाल की एकात्मता के लिए खतरनाक है अपितु उसके दूरगामी दुष्परिणामों से भी भारत अप्रभावित रहे बगैर नहीं रहेगा। नेपाल की घटना ने एक बार पुनः साबित कर दिया है कि इस देश के राजनेताओं के लिए अपने राजनीतिक स्वार्थ प्रिय हैं न कि राष्ट्रीय हित और जब भी राष्ट्र हित पर व्यक्तिगत स्वार्थ हावी होते हैं तो उसका परमार्थ से सम्बन्ध पूर्ण रूप से विच्छेद हो जाता है। नेपाल की घटना से यह स्पष्ट कहा जा सकता है वही दुष्कर्म, वही पाप एक बार पुनः इस देश की केन्द्रीय सत्ता ने नेपाल के माध्यम से राष्ट्रीय हितों पर कुठाराघात करके किया है, जो पाप सन् के 1950 नेहरू ने तिब्बत को चीन का अंग मानकर किया था और जो पाप 0दशक में पं 95 में श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने पाकिस्तान के 1971 सन्हजार से अधिक सैनिकों को बिना शर्त रिहा करके कश्मीर की समस्या को अनसुलझा करके किया था। आज वही पाप नेपाल में माओवादी आतंकवादियों को स्वीकार करके भारत की केन्द्रीय सत्ता ने चीन की प्रभुसत्ता नेपाल के अन्दर भी अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार कर किया है। आखिर राजनेताओं के पाप और दुष्कर्म की सजा कब तक इस देश की जनता भुगतेगी? नेपाल के माओवादी लोकतंत्रवादी अथवा मानवतावादी कब से हो गये? अगर इनका लोकतंत्र में ही विश्वास होता अथवा वे मानवतावादी होते तो पिछले हजार से अ 15 वर्षों में 12धिक निर्दोष नागरिकों की हत्या नेपाल में नहीं करते। अगर माओवादी लोकतंत्रवादी होते तो अब तक नेपाल में लोकतांत्रिक प्रक्रिया शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हो चुकी होती। माओवादी भारत समर्थक भी

नहीं हैं। अगर वे भारत समर्थक होते तो भारत की 1950 नेपाल की सन्-''पीस एण्ड फ्रेण्डशिप'' की ट्रीटी को समाप्त करने की धमकी नहीं देते। अगर माओवादी भारत हितैषी होते तो अपने नापाक इरादों को उजागर करने के लिए पशुपति से तिरुपति तक अर्थात् हिमालय के उत्तुंग शिखर से सुदूर दक्षिण में कन्याकुमारी तक माओलैण्ड बनाने का सपना नहीं देखते। माओलैण्ड भारत की एकात्मता और अखण्डता को सीधे सीधे चुनौती है। यह सब जानते-हुए भी अगर भारत के राजनेता माओवादियों को शुभकामनाएँ देते हैं तो यह राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने का महापाप है जिसका खामियाजा अन्ततः निरीह जनता के साथ ही सम्पूर्ण देश को भुगतना पड़ेगा। यह देश अपने राजनेताओं के इस पाप को कब तक ढोएगा, कहा नहीं जा सकता। फिलहाल तो यहाँ की राजनीति और इसके राजनेताओं के चरित्र के सम्बन्ध में तो यही कहा जा सकता है कि 'सदियों ने खता की है, लम्हों ने सजा पाई है।'